जपसूत्रम्

प्रथम खण्ड

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ

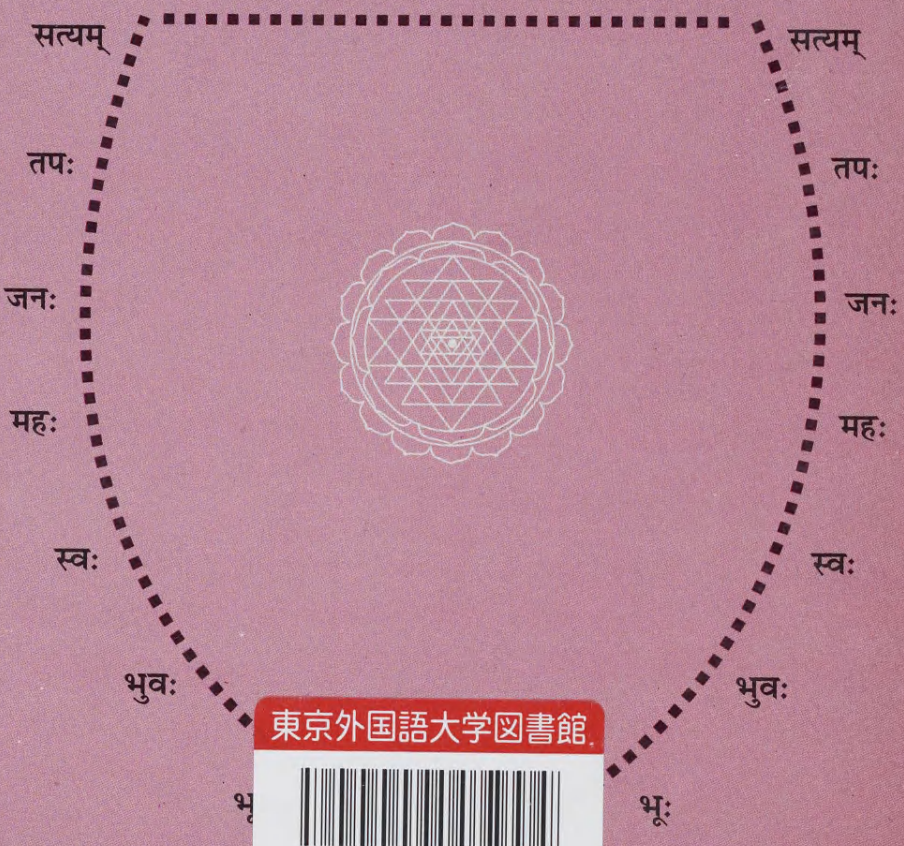

東京外国語大学図書館
0000611659

स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती

जपसूत्रम्

प्रथमखण्डः

(तान्त्रिक अध्यात्मविज्ञान के श्रेष्ठ अङ्ग ज्ञान और योगरहस्य
की व्याख्या-सहित जपविद्या का अनुपम समीक्षण, अनादिपरम्परागत
आगमज्ञान और प्रातिभस्वरूप साक्षात् अनुभवात्मक विवेकज ज्ञान के
परस्पर समन्वय के प्रभाव से)

प्रणेता

स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती

(पूर्वाश्रम के प्रोफेसर श्रीप्रमथनाथ मुखोपाध्याय)

म०म० श्रीगोपीनाथ कविराज की विस्तृत भूमिका से समृद्ध

अनुवादिका एवं सम्पादिका

(पादटिप्पणी, अन्वय, शब्दानुक्रमणी, विशिष्ट टिप्पणी आदि
के अभिनव संयोजन-सहित)

प्रेमलता शर्मा

अध्यक्षा, संगीतशास्त्र-विभाग

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-५

東京外国語大学
図書館蔵書
611659
平成 18 年度

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी